स्वास्थ्य के लिए एक अनूठी चौपाल

# डॉक्टरों का नारा चलो गांव की ओर

गांव वालों को समझाते डॉ. टोंक

रासविहारी

**महानगरों** व शहरों में बड़े-बड़े और महंगे अस्पतालों में जो स्वास्थ्य सुविधाएं मौजूद हैं, वे वहां रहने वालों को ही नहीं मिल पाती हैं, गांव के गरीब व साधनहीन लोगों को मिलने की तो बात ही बेमानी लगती है। यदि किसी तरह गांव का आदमी शहर अपने इलाज के लिए आ भी गया तो उसे अस्पतालों में

महिलाओं को सेहत संबंधी जानकारी देती डॉ. मेनिका

जांच व अन्य प्रक्रियाओं के कारण न सिर्फ परेशानी का सामना करना पड़ता है बल्कि वह खुद को ठगा हुआ भी महसूस करता है। लिहाजा वह अपनी बीमारी को नियति मान तकलीफ में जीने लगता है। कुछ मामलों में ऐसा भी देखा गया है कि उन्हें इसका जरा-सा इल्म नहीं कि उन्हें कौन-सी बीमारी है और वह किस चरण तक जा पहुंची है। ग्रामीण स्वास्थ्य की दिशा में सरकार के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। ऐसे में या तो गांव के लोगों को उनके भाग्य व बीमारियों के भरोसे छोड़ दिया जाए या कोई पहल की जाए।

सरकार तो बहुत जोर देती है कि डॉक्टरों को गांव में जाकर अपनी सेवाएं देनी चाहिए लेकिन गिने-चुने डॉक्टर ही इसे मानना चाहते हैं और देश के स्वास्थ्य को सुधारने का बीड़ा उठाना चाहते हैं। लेकिन किसी को तो पहल करनी होगी जिसे गांवों की फिक्र है, गांव वालों के स्वास्थ्य की फिक्र है। ऐसी ही एक पहल की है चौपाल ने।

चौपाल एक गैर-सरकारी संस्था है जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के गांवों के निवासियों के स्वास्थ्य को लेकर काम कर रही है। पिछले पांच सालों से यह संस्था 100 से अधिक हेल्थ कैंप लगा चुकी है जिनमें 150 हजार लोगों की जांच व इलाज किया जा चुका है। इस संस्था से डॉक्टर, कृषि विशेषज्ञ, समाज विज्ञानी, प्रबंधन व प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ जुड़े हुए हैं जो ग्रामीणों को हर प्रकार से सहायता का लक्ष्य रखते हैं। समुदाय निर्माण के सभी घटकों स्वास्थ्य, साफ-सफाई, कृषि, पशु धन, सामाजिक मुद्दों जैसे कन्या भ्रूण हत्या, नशा, महिला सशक्तिकरण इत्यादि को शामिल करते हुए ग्रामीण भारत के समग्र विकास को इस संस्था ने ध्यान में रखा है। सप्ताह के अंत में कैंप का आयोजन किया जाता है जिसमें गांव के लोग अपने स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को लेकर इनके पास आते हैं और निहायत ही कम कीमत पर बेहतर इलाज की सुविधा का लाभ उठाते हैं।

यह चौपाल अपने साथ कई चिकित्सक, बाल रोग विशेषज्ञ, महिला रोग विशेषज्ञ, मनोचिकित्सक, आंखों के डॉक्टर, दांतों के डॉक्टर, रेडियोलॉजिस्ट की एक टीम लेकर गांवों में जाती है। उनके साथ ईसीजी, अल्ट्रा साउंड, खून की जांच, आंखों की जांच इत्यादि के लिए मशीनें भी साथ होती हैं जिनकी सहायता से तत्काल जांच कर ली जाती है और आगे की जांच व इलाज के लिए रास्ता मिल जाता है।

चौपाल के चेयरमैन डॉ. आर.एस. टोंक ने बताया कि जिन इलाकों में हमारी संस्था काम कर रही है, वहां पोषण एक बड़ी समस्या है। कहने को तो इन इलाकों में डेयरी और फार्म उत्पाद जरूरत से ज्यादा होता है लेकिन आय बढ़ाने के नाम पर सब कुछ बाजार के हवाले कर दिया जाता है और परिवार के पोषण की बात छूट जाती है। चौपाल यह समझाने की कोशिश करती है कि स्वास्थ्य की अहमियत क्या है। लोग यह तो बताते हैं कि उनके शरीर में तकलीफ कहां है लेकिन उन्हें यह पता नहीं होता कि ऐसा क्यों हो रहा है। हमारे डॉक्टर उन्हें स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देते हैं कि खान-पान व साफ-सफाई की क्यों जरूरत है। इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य के बारे में भी जागरूक किया जाता है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों को गंभीर बीमारी होती है, उन्हें सरकारी अस्पतालों में लाकर इलाज करने की कोशिश की जाती है ताकि उनका अधिक पैसा न खर्च हो।

चौपाल के कार्यक्रमों की प्रभारी डॉ. मोनिका पुरी ने बताया कि उनकी संस्था जन स्वास्थ्य को लेकर काम करती है जिसमें कम खर्चे में बेहतर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जा सके। महंगी दवाइयों के प्रति डॉक्टरों का पूर्वाग्रह सराहनीय तो नहीं लेकिन हमारी कोशिश यही रहती है कि जेनेरिक दवाइयों को चलन में लाया जाए। सरकार भी ऐसी केमिस्ट शॉप खोल रही है जहां जेनेरिक दवाइयां मिलती हैं। उन्होंने बताया कि कैंप में 25-30 डॉक्टर व पैरामेडिक्स के साथ अन्य लोगों की टीम काम करती है। गांव में काम करने के अनुभव के बारे में उन्होंने कहा कि उन्हें आत्मिकशांति मिलती है। लोग दुआएं देते हैं और इतना दुलार देते हैं कि मन का हर कोना भीग जाता है। हम चाहते हैं कि हर क्षेत्र में ऐसी टीम हो। हमसे जितना बन पड़ता है, कर रहे हैं। अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

चौपाल ने हरियाणा के सोनीपत में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खोला है जहां लोग आते हैं और मामूली शुल्क देकर अपना इलाज कराते हैं। उनकी योजना और केंद्र खोलने की है। सोनीपत में ही 376 से अधिक गांव हैं। फिर बात स्वास्थ्य पर ही आकर नहीं रुकती है। कृषि संबंधी सलाह देनी हो या महिलाओं के सशक्तिकरण की बात हो, संस्था अपने साधनों व विशेषज्ञों की मदद से हर संभव मदद करने की कोशिश करती है।

चौपाल में जमा ग्रामीण